International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 77-80

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 77-80
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-09-2019
Accepted: 17-10-2019

वीर सिंह
(1). शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2). महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मधु पटेल
(1). शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2). महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

काशिकाके प्रथम अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश (न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु)

वीर सिंह

सारांश
मेरे शोधप्रबन्धका शीर्षक 'काशिकाके प्रथम अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश' है। वस्तुतः काशिकाकी स्वकीय शैली यह है कि उसमें जो उदाहरण दिये जाते हैं उनका प्रक्रियानिर्देश प्रायः किया ही नहीं जाता है और यदि कहींपर किया भी जाता है तो वह इतना निगूढ होता है कि उतनेमात्रसे उदाहरणोंकी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं हो पाती है और प्रक्रियाको समझे विना शास्त्रकी चरितार्थता असम्भव है। यही कारण मेरे इस शोधप्रबन्धकी अपरिहार्यताको प्रदर्शित करता है जो कि विना प्रक्रियानिर्देशके सम्भव नहीं है। मेरा यह प्रयास उसी दिशामें है।

कूटशब्दः- काशिका, पदान्तद्विर्वचनवरेयलोप, स्वरसवर्णानुस्वार, दीर्घजश्चर्विधिषु, प्रक्रिया।

प्रक्रियानिर्देश
कौ स्तः
किम्– प्रातिपदिक। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे किम् इससे पर प्रथमा विभक्ति, द्विवचन, औ यह प्रत्यय हुआ–
किम् औ– 'किमः कः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/103) इस सूत्रसे किम् इसके स्थानमें क यह आदेश हुआ–
क औ– 'वृद्धिरेचि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/85) इस सूत्रसे अ औ इन दोनोंके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (औ) यह एकादेश हुआ–
क् औ– कौ।
अस (अस्)– धातु। 'वर्तमाने लट्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/123) इस सूत्रसे अस् इससे पर लट् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, द्विवचन, तस् यह प्रत्यय हुआ–
अस् तस्– 'कर्तरि शप्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/68) इस सूत्रसे अस् इससे पर शप् यह प्रत्यय हुआ–
अस् शप् तस्– 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/72) इस सूत्रसे शप् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अस् तस्– 'श्नसोरल्लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/111) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
स् तस्– 'ससजुषो रुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/66) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें रु (र्) यह आदेश हुआ–
स् त र्– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/15) र् इसके स्थानमें विसर्ग (:) यह आदेश हुआ–
स् तः– स्तः।
कौ स्तः– 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे 'एचोऽयवायावः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/75) इस सूत्रसे औ इसके स्थानमें आव् यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे औ इसके स्थानमें आव् इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ।

अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे पुनः अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः औ इसके स्थानमें आव् यह आदेश प्राप्त हुआ।

'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः औ इसके स्थानमें आव् इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ–

कौ स्तः।। इति सिद्धम्।।

दद्ध्यत्र

दधि अत्र– 'इको यणचि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/74) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें यण् (य्) यह आदेश हुआ–

द ध् य् अत्र– 'अनचि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/46) इस सूत्रसे ध् इसके स्थानमें ध् ध् यह द्विर्वचनादेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे य् यह आदेश इ इस स्थानीके समान हुआ जिससे ध् इसके स्थानमें ध् ध् इस द्विर्वचनादेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे य् इस आदेशके इ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः ध् इसके स्थानमें ध् ध् यह द्विर्वचनादेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे य् यह आदेश पुनः इ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः ध् इसके स्थानमें ध् ध् इस द्विर्वचनादेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः य् इस आदेशके इ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः ध् इसके स्थान में ध् ध् यह द्विर्वचनादेश हुआ–

द ध् ध् य् अत्र– 'झलां जश्झशि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/52) इस सूत्रसे ध् इसके स्थानमें जश् (द्) यह आदेश हुआ–

द द् ध् य् अत्र– दद्ध्यत्र।। इति सिद्धम्।।

यायावरः

या– धातु। 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/22) इस सूत्रसे या इससे पर यङ् (य) यह प्रत्यय हुआ–

या य– 'सन्यङोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/9) इस सूत्रसे याय् इसके स्थानमें याय् याय् यह द्विर्वचनादेश हुआ–

याय् याय् अ– 'ह्रस्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/59) इस सूत्रसे आ इसके स्थानें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–

य् अ य् याय् अ– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे य् य् इन दोनोंके स्थानमें य् यह शेषादेश हुआ–

य् अ याय् अ– 'दीर्घोऽकितः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/83) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–

य् आ याय् अ– 'यश्च यङः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/176) इस सूत्रसे य् आ याय् अ इससे पर वरच् (वर) यह प्रत्यय हुआ–

य् आ याय् अ वर– 'अतो लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/48) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

य् आ याय् वर– 'लोपो व्योर्वलि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/64) इस सूत्रसे य् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

य् आ या वर– 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे 'आतो लोप इटि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/64) इस सूत्रसे आ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे आ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'अचः परस्मिन् **पूर्वविधौ'** (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे पुनः अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः आ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन प्राप्त हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः आ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनकी प्राप्ति का बाध हुआ। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे य् आ या वर इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु (स्) यह प्रत्यय हुआ–

य् आ या वर स्– 'ससजुषो रुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/66) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें रु (र्) यह आदेश हुआ–

य् आ या वर र्– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/15) इस सूत्रसे र् इसके स्थानमें विसर्ग (:) यह आदेश हुआ–

य् आ या वरः– यायावरः।। इति सिद्धम्।।

कण्डूति

कण्डूञ् (कण्डू)– धातु। 'कण्ड्वादिभ्यो यक्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/27) इस सूत्रसे कण्डू इससे पर यक् (य) यह प्रत्यय हुआ–

कण्डू य– 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/3/174) इस सूत्रसे कण्डू य इससे पर क्तिच् (ति) यह प्रत्यय हुआ–

कण्डू य ति– 'अतो लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/48) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

कण्डू य् ति– 'लोपो व्योर्वलि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/64) इस सूत्रसे य् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे य् इसके लोपसंज्ञक अदर्शनकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः य् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन पुनः अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः य् इसके लोपसंज्ञक अदर्शनकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः य् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

कण्डू ति– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे कण्डू ति इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु (स्) यह प्रत्यय हुआ–

कण्डू ति स्– 'ससजुषो रुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/66) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें रु (र्) यह आदेश हुआ–

कण्डू ति र्– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/15) इस सूत्रसे र् इसके स्थानमें विसर्ग (:) यह आदेश हुआ–

कण्डू तिः– कण्डूतिः।। इति सिद्धम्।।

शिण्ढि

शिष्लृ (शिष्)– धातु। 'लोट् च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/3/162) इस सूत्रसे शिष् इससे पर लोट् लकार, परस्मैपद, मध्यमपुरुष, एकवचन, सिप् (सि) यह प्रत्यय हुआ–

शिष् सि– 'सेर्ह्यपिच्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/87) इस सूत्रसे सि इसके स्थानमें हि यह आदेश हुआ–

शिष् हि– 'रुधादिभ्यः श्नम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/87) इस सूत्रसे इ इससे पर श्नम् (न) यह प्रत्यय हुआ–

श् इ न ष् हि– 'श्नसोरल्लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/111) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

श् इ न् ष् हि– 'हुझल्भ्यो हेर्धिः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/101) इस सूत्रसे हि इसके स्थानें धि यह आदेश हुआ–

श् इ न् ष् धि– 'ष्टुना ष्टुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/40) इस सूत्रसे ध् इसके स्थानमें ढ् यह आदेश हुआ–
श् इ न् ष् ढ् इ– 'झलां जश्झशि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/52) इस सूत्रसे ष् इसके स्थानमें जश् (ड्) यह आदेश हुआ–
श् इ न् ड् ढ् इ– 'झरो झरि सवर्णे' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/64) इस सूत्रसे ड् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
श् इ न् ढ् इ– 'नश्चापदान्तस्य झलि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/24) इस सूत्रसे न् इसके स्थानमें अनुस्वार (ं) यह आदेश हुआ–
श् इं ढ् इ– 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/57) इस सूत्रसे अनुस्वार (ं) इसके स्थानमें परसवर्ण (ण्) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे अनुस्वार (ं) इसके स्थानमें परसवर्ण (ण्) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः अनुस्वार (ं) इसके स्थानमें परसवर्ण (ण्) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन पुनः अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः अनुस्वार (ं) इसके स्थानमें परसवर्ण (ण्) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः अनुस्वार (ं) इसके स्थानमें परसवर्ण (ण्) यह आदेश हुआ–
श् इ ण् ढ् इ– शिण्ढि।। इति सिद्धम्।।

शिंषन्ति

शिष्लृ (शिष्)– धातु। 'वर्तमाने लट्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/123) इस सूत्रसे शिष् इससे पर लट् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, बहुवचन, झि यह प्रत्यय हुआ–
शिष् झि– 'रुधादिभ्यः श्नम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/78) इस सूत्रसे इ इससे पर श्नम् (न) यह प्रत्यय हुआ–
श् इ न ष् झि– 'झोऽन्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/3) इस सूत्रसे झ् इसके स्थानमें अन्त् यह आदेश हुआ–
श् इ न ष् अन्त् इ– 'श्नसोरल्लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/111) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
श् इ न् ष् अन्त् इ– 'नश्चापदान्तस्य झलि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/24) इस सूत्रसे न् इसके स्थानमें अनुस्वार (ं) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे न् इसके स्थानमें अनुस्वार (ं) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः न् इसके स्थानमें अनुस्वार (ं) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन पुनः अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः न् इसके स्थानमें अनुस्वार (ं) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः न् इसके स्थानमें अनुस्वार (ं) यह आदेश हुआ–
श् इं ष् अन्त् इ– शिंषन्ति।। इति सिद्धम्।।

प्रतिदीव्ना

प्रतिदिवन्– प्रातिपदिक। 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/18) इस सूत्रसे प्रतिदिवन् इससे पर तृतीया विभक्ति, एकवचन, टा (आ) यह प्रत्यय हुआ–
प्रतिदिवन् आ– 'अल्लोपोऽनः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/134) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
प्रतिदिव् न् आ– 'हलि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/77) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ई) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे इ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ई) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः इ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ई) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन पुनः अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः इ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ई) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः इ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ई) यह आदेश हुआ–

प्रतिद् ई व् न् आ– प्रतिदीव्ना।। इति सिद्धम्।।

सन्धिः

लौकिक विग्रह– समाना चासौ ग्धिः।
अलौकिक विग्रह– समाना सु ग्धि सु।
अद (अद्)– धातु। 'बहुलं छन्दसि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/39) इस सूत्रसे अद् इसके स्थानमें घस्लृ (घस्) यह आदेश हुआ–
घस्– 'स्त्रियां क्तिन्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/3/94) इस सूत्रसे घस् इससे पर क्तिन् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
घस् ति– 'घसिभसोर्हलि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/100) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
घ् स् ति– 'झलो झलि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/26) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
घ् ति– 'झषस्तथोर्धोऽधः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/40) इस सूत्रसे त् इसके स्थानमें ध् यह आदेश हुआ–
घ् ध् इ– 'झलां जश्झशि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/52) इस सूत्रसे घ् इसके स्थानमें जश् (ग्) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे घ् इसके स्थानमें जश् (ग्) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः घ् इसके स्थानमें जश् (ग्) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन पुनः अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः घ् इसके स्थानमें जश् (ग्) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः घ् इसके स्थानमें जश् (ग्) यह आदेश हुआ–
ग् ध् इ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे ग् ध् इ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
ग् ध् इ सु।
समाना सु ग्धि सु– 'पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/57) इस सूत्रसे समाना सु ग्धि सु

इसकी कर्मधारयतत्पुरुषसमाससंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे सु सु इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–

समाना ग्धि– 'समानस्य छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदर्केषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/3/83) इस सूत्रसे समानाके स्थानमें स यह आदेश हुआ–

स ग्धि– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे स ग्धि इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु (स्) यह प्रत्यय हुआ–

स ग्धि स्– 'ससजुषो रुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/66) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें रु (र्) यह आदेश हुआ–

स ग्धि र्– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/15) इस सूत्रसे र् इसके स्थानमें विसर्ग (:) यह आदेश हुआ–

स ग्धिः– सग्धिः।। इति सिद्धम्।।

जक्षतुः

अद (अद्)– धातु। 'परोक्षे लिट्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/115) इस सूत्रसे अद् इससे पर लिट् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, द्विवचन, तस् यह प्रत्यय हुआ–

अद् तस्– 'लिट्यन्यतरस्याम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/40) इस सूत्रसे अद् इसके स्थानमें घस्लृ (घस्) यह आदेश हुआ–

घस् तस्– 'परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/82) इस सूत्रसे तस् इसके स्थानमें अतुस् यह आदेश हुआ–

घस् अतुस्– 'गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/98) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

घ् स् अतुस्– 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/8) इस सूत्रसे घ् स् इसके स्थानमें घस् घस् यह द्विर्वचनादेश हुआ–

घस् घस् अतुस्– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे घ् स् इन दोनोंके स्थानमें घ् यह शेषादेश हुआ–

घ् अ घस् अतुस्– 'कुहोश्चुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/62) इस सूत्रसे घ् इसके स्थानमें झ् यह आदेश हुआ–

झ् अ घस् अतुस्– 'अभ्यासे चर्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/53) इस सूत्रसे झ् इसके स्थानमें जश् (ज्) यह आदेश हुआ–

ज् घस् अतुस्– 'खरि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/54) इस सूत्रसे घ् इसके स्थानमें चर् (क्) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे घ् इसके स्थानमें चर् (क्) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः घ् इसके स्थानमें चर् (क्) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन पुनः अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः घ् इसके स्थानमें चर् (क्) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/57) इस सूत्रसे पुनः अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनेका निषेध हुआ जिससे पुनः घ् इसके स्थानमें चर् (क्) यह आदेश हुआ–

ज् क् स् अतुस्– 'शासिवसिघसीनां च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/60) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें ष् यह मूर्धन्यादेश हुआ–

ज् क् ष् अतुस्– 'ससजुषो रुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/66) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें रुत्व (र्) यह आदेश हुआ–

ज् क् ष् अतु र्– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/15) इस सूत्रसे र् इसके स्थानमें विसर्ग (:) यह आदेश हुआ–

ज् क् ष् अतुः– जक्षतुः।। इति सिद्धम्।।

सहायकग्रन्थसूची

1. अष्टाध्यायीसूत्रापाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. धातुपाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. अष्टाध्यायीभाष्यम् (प्रथमावृत्तिः), त्रयो भागाः– लेखकौ– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
4. माधवीया धातुवृत्तिः (सायणविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
5. काशिका (वामनजयादित्यविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
6. व्याकरणमहाभाष्यम् (महर्षिपतञ्जलिमुनिविरचितम्, प्रदीपोद्द्योतटीकाद्वयसहितम्), षड् भागाः– सम्पादकः– श्री भार्गव शास्त्री, प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।